ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI TITLED No. :UPBIL04292,
RNI REG. No.: UPBIL/2014/66218, SOCI.REG. No.: 561/2013-14 Vol.-5, No.-II, PP-321-325,YEAR- DEC.2016

उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत दिव्यांग और सामान्य विद्यार्थियों में समायोजन की स्थितियों का तुलनात्मक अध्ययन

❑ डॉ0 जेनुल आविदीन

समाज में सामान्य बालकों के अतिरिक्त कुछ ऐसे भी बालक पाये जाते हैं, जो गर्भ में भ्रुण की पूर्ण रूप से देखभाल न होने के कारण, जन्म के पश्चात् पूर्ण पौष्टिक आहार न मिलने के कारण या किसी दुर्घटना होने के कारण दिव्यांगता का शिकार हो जाते हैं। दिव्यांगजन अधिनियम 2016 के अन्तर्गत दिव्यांगजन में 21 तरह की दिव्यांगताओं वाले व्यक्ति को शामिल किया गया है। शारीरिक चुनौतीयुक्त विद्यार्थियों की शिक्षा व विकास पर भी ध्यान केन्द्रित करना अपरिहार्य है। इन विद्यार्थियों में एक ऐसी शारीरिक विकलांगता है, जिसमें माँसपेशियों तथा अस्थियों के दोष व विकार पाये जाते हैं, जिनकी वजह से इन विद्यार्थियों को अंग संचालन में अत्यधिक कठिनाई का सामना करना पड़ता है। यहाँ तक कि चलने फिरने तथा कमेन्द्रियों के द्वारा अपना कार्य करने व अधिगम अनुभव अर्जित करने में काफी बाधाएँ आती हैं और जिनकी वजह से इन्हें विभिन्न प्रकार के समायोजन, शिक्षा तथा विकास सम्बन्धी अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। चूँकि मानव एक सामाजिक प्राणी है। समाज में मान्यता प्राप्त करना मानव की सार्वभौमिक इच्छा होती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 ने सबके लिए शिक्षा अर्थात् शिक्षा के सर्वव्यापीकरण की बात की है। 40 प्रतिशत या इससे अधिक दिव्यांगता के शिकार व्यक्ति को दिव्यांग की श्रेणी में रखा गया है। दिव्यांग बच्चों को ऐसी शिक्षा उपलब्ध करायी जाये ताकि उन्हें कुसमायोजित होने से बचाया जा सके।

शिक्षा के द्वारा ही दिव्यांग बच्चों को सही निर्देश दिया जा सकता है, जिससे ऐसे विद्यार्थी शैक्षिक, सामाजिक, व्यवसायिक, भावनात्मक जीवन में सुसमायोजित हो सकें। वर्तमान अध्ययन में जौनपुर के उच्च प्राथमिक विद्यालय के सामान्य छात्रों से 150 सैंपल और 50 दिव्यांग छात्रों से एकत्र किया गया है, जो कि जौनपुर जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के शासकीय विद्यालय में समावेशित शिक्षा के अन्तर्गत अध्ययनरत हैं। समायोजन क्षमता के मापन हेतु समायोजन क्षमता परीक्षण मानकीकृत द्वारा ए. के. पी. सिन्हा व डॉ. आर. पी. सिंह का उपयोग किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है। परिणामों में दिव्यांग छात्र एवं छात्राओं की समायोजन क्षमता में सार्थक अंतर पाया गया।

शिक्षा एक आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। व्यक्तित्व के सम्पूर्ण विकास को शिक्षा कहा जाता है। शिक्षा केवल परीक्षा पास करने तक ही सीमित नहीं है, यह हमारे क्षितिज को विस्तृत करती है। हमारी अंर्तदृष्टि को गहरा करती है। हमारी प्रतिक्रियाओं को परिष्कृत करती है और हमारे विचारों और भावनाओं को उत्तेजित करती है। इस प्रकार शिक्षा अपने पूर्ण रूप में व्यक्तित्व के विकास के लिए आवश्यक दृष्टिकोण कौशल ज्ञान और अन्य कारकों को शामिल करती है। समग्र रूप से अगर बात करें तो एक व्यक्ति के व्यक्तित्व को घटकों में आत्म–अवधारणा, समायोजन, चिन्ता, बुद्धि और बहुत कुछ के रूप में माना जा सकता है। कहा जाता है कि व्यक्तित्व जन्म के बाद वातावरण और व्यक्ति के व्यक्तिगत अनुभवों से प्राप्त होता है। हालांकि अनुभव और वातावरण किन्हीं दो व्यक्तियों के लिए समान नहीं होता है, लेकिन उनके समान व्यक्तित्व लक्षण हो सकते हैं।

किसी भी देश में, समाज में सामान्य एवं प्रतिभाशाली बच्चों के वर्ग के अतिरिक्त एक वर्ग

❑ एम0 कॉम0 एम0 एड0, पी0–एच0 डी0– शिक्षाशास्त्र, श्री गोविंद महाविद्यालय तेवरखास, बिलारी, मुरादाबाद (उ0प्र0) भारत

दिव्यांग बच्चों का भी है। भारत में दिव्यांग की समस्या न सिर्फ अधिक है, बल्कि लगातार बढ़ती भी जा रही है। जनसंख्या वर्ष 2011 के आँकड़ों से ज्ञात होता है कि भारत में दिव्यांगों की कुल जनसंख्या वर्ष 2001 के 2.19 करोड़ से बढ़ कर वर्ष 2011 में 2.68 करोड़ हो गयी है । दिव्यांगों की जनसंख्या में बढोत्तरी होने के साथ शिक्षा शास्त्रियों के मानसपटल पर दिव्यांग के शिक्षण अधिगम की जटिल समस्या भी बनी हुई है। भारत का संविधान अपने सभी नागरिकों के लिए समानता, स्वतंत्रता, न्याय, गरिमा एवं शिक्षा सुनिश्चत करता है। दिव्यांगों को मुख्य धारा में लाने के लिए सरकार प्रयास करती रहती है। इन्हें शिक्षित करना उच्च शिक्षा प्रदान करना, तॉकि वे आत्मनिर्भर बन सके। भारत सरकार द्वारा शिक्षा प्राप्ति हेतु शिक्षण संस्थानों में दिव्यांग बच्चों को आरक्षण दिया गया है। पी. डब्ल्यू. डी एक्ट 1995 एवं दिव्यांगजन अधिनियम 2016 लाया गया है, जिसके तहत देश के विभिन्न सरकारी संस्थानों में सुविधाएं निर्धारित की गई हैं। इस प्रकार से दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षा एवं पुर्नवास पर अत्यधिक ध्यान दिया जा रहा है।

सिंह और अन्य (1990) ने सामान्य और शारीरिक रूप से अक्षम छात्रों के समायोजन पर अध्ययन किया। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य सामान्य और शारीरिक रूप से अक्षम छात्रों के पारिवारिक समायोजन की तुलना करना था। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि एक दिव्यांग बच्चे के परिवार को सामान्य बच्चों के परिवारों की तुलना में अधिक वित्तीय तनाव उनके परिवार की दिनचर्या और अवकाश में लगातार गड़बड़ी, खराब सामाजिक सम्पर्क से उनके स्वास्थ्य, शारीरिक और मानसिक स्तर पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

आहूजा, ए. (1999) ने दिव्यांग बच्चों के सीखने की रणनीतियाँ, उपलब्धि, आत्म–अवधारणा और सामाजिक कौशल विकास व्यापक हस्तक्षेप के प्रभाव पर अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य दिव्यांग बच्चों की भाषाई क्षमता, आत्म–अवधारणा का स्तर और सामाजिक कौशल विकास की जाँच करना था। उपलब्धि पर व्यापक हस्तक्षेप रणनीतियों की प्रभावशीलता आत्म–अवधारणा के व्यक्तिगत सामाजिक चर और दिव्यांग बच्चों के सीखने के सामाजिक समायोजन का अध्ययन करना था। सैंपल श्रीनगर गढ़वाल के अलग–अलग स्कूलों से लिया गया था। आँकड़ों को प्राप्त करने के लिए प्रायोगिक पद्धति और अशाब्दिक समूह परीक्षण बुद्धि साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया। अध्ययन के निष्कर्ष यह थे कि सीखने में अक्षम बच्चों के विकास में पर्यावरणीय कारक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

विपिंदर नागरा (2014) ने माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के सामाजिक बुद्धि और समायोजन पर अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच सामाजिक बुद्धि और समायोजन का अध्ययन करना था। स्कूलों के प्रकार के आधार पर लड़कों और लड़कियों की सामाजिक बुद्धि और समायोजन की तुलना करना था। पंजाब के होशियारपुर शहर के माध्यमिक विद्यालय के छात्रों पर अध्ययन किया गया था। कुल 200 माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का यादृच्छिक नमूना प्राप्त किया गया था। विश्वसनीयता और वैधता गुणांक क्रमशरू 0.05 और 0.01 स्तरों पर महत्वपूर्ण थे। डॉ. एन. के. द्वारा उपयोग किये गये उपकरण सामाजिक खुफिया पैमाने (एसआईएस) थे। ए. के. पी सिन्हा और आर. पी. सिंह द्वारा समायोजन सूची का प्रयोग किया गया। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि सामाजिक बुद्धि और समायोजन के आधार पर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के सामान्य छात्र औसत पाये गये।

समायोजन का अर्थ– समायोजन शब्द का अर्थ है, पिछले लम्बे समय से स्वयं को हमारे पर्यावरण की मांग के अनुसार समायोजित करना। एक व्यक्ति की आमतौर पर दो प्रकार की मांगें होती हैं – बाहरी (सामाजिक) और आन्तरिक (जैविक और मनोवैज्ञानिक)। कभी–कभी ये मांगें एक–दूसरे के विरोध में आ जाती हैं और ये समायोजन की विशेष समस्या पेश करने वाले व्यक्ति की विभिन्न आवश्यकताओं या मांगों के बीच व्यक्तिगत संघर्षों के लिए समायोजन को एक जटिल प्रक्रिया बना देती

हैं। ये मांगे निराशा पैदा कर सकती हैं और असामान्य व्यवहार को जन्म दे सकती हैं। पिछले लम्बे समय से मनोवैज्ञानिकों ने समायोजन को कई अलग–अलग तरीके से समझाने की कोशिश की है। जिसमें मुख्य दो तरह से समायोजन को समझाया गया है–

एक उपलब्धि या सीखना है और दूसरा एक प्रक्रिया है। इसका अर्थ है कि समायोजन प्रक्रिया और उत्पाद दोनों है। एक उपलब्धि विभिन्न परिस्थितियों में अपने कर्तव्यों को निभाने के लिए एक व्यक्ति की दक्षता की सेवा करती है। शिक्षा के लिए स्कूलों में अच्छी तरह से समायोजित विद्यार्थियों की आवश्यकता होती है।

समायोजन की परिभाषाएँ – Glanz और Walston (1958) के अनुसार समायोजन व्यक्तित्व के साथ जीवन की समस्याओं को पूरा करने की प्रक्रिया और कार्यवाई में व्यक्तित्व के आत्म–अवधारणा पहलू हैं।

कोलमैन ने वर्णन किया है– समायोजन व्यक्ति के संकट से निपटने और उसकी जरूरतों को पूरा करने के प्रयास का परिणाम है।

उद्देश्य –

दिव्यांग विद्यार्थियों का सांवेगिक, समाजिक एवं शैक्षिक समायोजन सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन करना।

सामान्य विद्यार्थियों का सांवेगिक, समाजिक एवं शैक्षिक समायोजन सम्बन्धी समस्याओं अध्ययन करना।

दिव्यांग विद्यार्थियों एवं सामान्य विद्यार्थियों का सांवेगिक, समाजिक एवं शैक्षिक समायोजन सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन करना।

परिकल्पना–

मुख्य परिकल्पना–

दिव्यांग विद्यार्थियों के सांवेगिक, समाजिक एवं शैक्षिक समायोजन सम्बन्धी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है।

सामान्य विद्यार्थियों के सांवेगिक, समाजिक एवं शैक्षिक समायोजन सम्बन्धी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है।

दिव्यांग विद्यार्थियों एवं सामान्य विद्यार्थियों के सांवेगिक, समाजिक एवं शैक्षिक समायोजन सम्बन्धी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है।

शून्य परिकल्पना–

दिव्यांग विद्यार्थियों के सांवेगिक, समाजिक एवं शैक्षिक समायोजन सम्बन्धी समस्याओं में कोई अन्तर नहीं हैं।

सामान्य विद्यार्थियों के सांवेगिक, समाजिक एवं शैक्षिक समायोजन सम्बन्धी समस्याओं में कोई अन्तर नहीं है।

दिव्यांग विद्यार्थियों एवं सामान्य विद्यार्थियों के सांवेगिक समायोजन सम्बन्धी समस्याओं में कोई अन्तर नहीं है।

दिव्यांग विद्यार्थियों एवं सामान्य विद्यार्थियों के समाजिक समायोजन सम्बन्धी समस्याओं में कोई अन्तर नहीं है।

दिव्यांग विद्यार्थियों एवं सामान्य विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन सम्बन्धी समस्याओं में कोई अन्तर नहीं है।

प्राथमिक आँकड़ा विश्लेषण– विश्लेषण में यह शामिल है कि अनुसंधान समस्या के उत्तर प्राप्त करने और परिकल्पना का परीक्षण करने के लिए अन्वेषक डेटा को घटक भागों में विभाजित कर देता है (डी. वोस, 1998)। आँकड़ों की व्याख्या का उद्देश्य इसे एक समझदार और व्याख्यात्मक रूप में कम करना है, तॉकि शोध समस्याओं के सम्बन्धों का अध्ययन और परीक्षण किया जा सके और एक निष्कर्ष निकाला जा सके। डेटा का विश्लेषण करने के लिए Independent T-test और Descriptive studies का उपयोग किया गया है।

विचरण सारांश तालिकाओं के विश्लेषण में रिपोर्ट किये गये परिणामों से यह स्पष्ट है कि उनमें महत्वपूर्ण अन्तर हैं और इसलिए टी–क्रिटिकल अनुपात का उपयोग करके साधनों के बीच अधिक विशिष्ट अन्तर तुलना की गई है। डेटा को प्रबंधित करने के लिए संपादन, वर्गीकरण और सारणीकरण का उपयोग

किया जाता है। संपादन का तात्पर्य सटीकता, उपयोगिता और पूर्णता के लिए एकत्रित कच्चे डेटा की जाँच करना है। वर्गीकरण अध्ययन के पैमाने और चर के मानदंडों के अनुसार, डेटा को विभाजित करने के लिए संदर्भित करता है। वर्गीकृत डेटा को डेटा एकत्र करने वाले टूल से व्यवस्थित जाँच के लिए सारणीबद्ध रूप में स्थानांतरित करने के लिए सारणीकरण प्रक्रिया द्वारा किया गया सारणीकरण। इसके अलावा, तीन चर के विभिन्न स्तरों के साथ–साथ महत्वपूर्ण अंतःक्रियात्मक प्रभावों में शामिल विभिन्न कोशिकाओं के लिए माध्यमानों की गणना की गई है। परिकलित साधन विभिन्न तालिकाओं में दिये गये हैं। मुख्य प्रभाव और अंतःक्रियात्मक प्रभाव भी प्रस्तुत किये गये हैं।

आँकड़ा संग्रह– वर्तमान अध्ययन में जौनपुर के उच्च प्राथमिक विद्यालय के सामान्य छात्रों से 150 सैंपल और 50 दिव्यांग छात्रों से एकत्र किया गया है। अन्वेषक ने विद्यालय के छात्रों से एक मुद्रित पुस्तिका के साथ मुलाकात की, जिसमें तीनों पैमाने शामिल हैं और विद्यार्थियों से सामाजिक, भावनात्मक और शैक्षिक के आधार पर डाटा एकत्रित किया। फ्रंटेज पर छात्रों के जनसांख्यिकीय सामान को खोजने के लिए व्यक्तिगत सूचना पत्रक को शामिल किया गया था। सभी छात्रों को तीन पैमानों के प्रश्नों का उत्तर देने के लिए उचित समय ने की अनुमति दी गई थी।

एकत्र किये गये डेटा को स्कोरिंग कुंजी के अनुसार स्कोर किया गया है और परिशिष्ट IV में प्रस्तुत किया गया है। डेटा Independent T-test और Descriptive studies के माध्यम से कंप्यूटर सॉटवेयर SPSS (Ver.-20) की मदद से विश्लेषण किया गया है।

डाटा को Independent T-test के द्वारा अलग–अलग (शैक्षिक, सामाजिक और भावनात्मक) और एक साथ भी विश्लेषण किया गया है, जिसके परिणाम आगे के टेबल्स में दिये गये हैं।

Adjustment Inventory for School Students by Sinha and Singh (1971)

स्कूली छात्रों के लिए समायोजन सूची का निर्माण और मानकीकरण ए. के. पी. सिन्हा और आर. पी. सिंह (1971) सूची समायोजन के तीन क्षेत्रों में माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के समायोजन को मापती है। भावनात्मक, सामाजिक और शैक्षिक इन्वेंट्री में समायोजन के प्रत्येक क्षेत्र में 20 आइटम और कुल 60 आइटम शामिल हैं। 20 आइटम भावनात्मक समायोजन को मापते हैं, 20 आइटम सामाजिक समायोजन को मापते हैं और 20 आइटम शैक्षिक समायोजन मापते हैं।

भावनात्मक समायोजन उच्च अंक अस्थिर भावना का संकेत देते हैं और कम अंक वाले छात्रों की प्रवृत्ति भावनात्मक रूप से स्थिर होती है।

सामाजिक समायोजन उच्च स्कोर करने वाले व्यक्ति विनम्र और सेवानिवृत्त होते हैं। कम अंक आक्रामक व्यवहार को दर्शाता है।

शैक्षिक समायोजन उच्च स्कोरिंग वाले व्यक्ति पाठ्यचर्या और सह पाठयक्रम कार्यक्रम में खराब रूप से समायोजित होते हैं, जबकि कम अंक वाले व्यक्ति स्कूल के कार्यक्रमों में अधिक रुचि रखते हैं।

प्रत्येक उप–पैमाने पर उच्च अंक और कुल परीक्षण को कुसमायोजन के लिए सिंड्रोम के रूप में माना जाता है। जिससे पता चल सके कि उपकरण अत्यधिक विश्वसनीय और वैध है।

टी–परीक्षण – Independent T-test (जिसे अयुग्मित नमूना टी परीक्षण भी कहा जाता है) T-test का सबसे सामान्य रूप है। यह आपको डेटा के दो सेटों के साधनों की तुलना करने में मदद करता है। यहां हम उच्च प्राथमिक स्तर के स्कूलों में पढ़ने वाले दिव्यांग छात्रों और सामान्य छात्रों की समायोजन स्थिति की तुलना करने में रुचि रखते हैं। हमने दिव्यांग और सामान्य छात्रों से अलग–अलग डेटा एकत्र किया है, तॉकि Independent T-test का उपयोग करते समय सामान्य छात्रों और दिव्यांग छात्रों के बीच छात्रों के प्रदर्शन की तुलना की जा सके।

परिकल्पना परीक्षण–

दिव्यांग विद्यार्थियों के सांवेगिक, समाजिक एवं शैक्षिक समायोजन सम्बन्धी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है। (Accepted)

सामान्य विद्यार्थियों के सांवेगिक, सामाजिक एवं शैक्षिक समायोजन सम्बन्धी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है। (Accepted)

दिव्यांग विद्यार्थियों एवं सामान्य विद्यार्थियों के सांवेगिक, समाजिक एवं शैक्षिक समायोजन सम्बन्धी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है। (Accepted)

शून्य परिकल्पना–

दिव्यांग विद्यार्थियों के सांवेगिक, समाजिक एवं शैक्षिक समायोजन सम्बन्धी समस्याओं में कोई अन्तर नहीं है। (Resected)

सामान्य विद्यार्थियों के सांवेगिक, समाजिक एवं शैक्षिक समायोजन सम्बन्धी समस्याओं में कोई अन्तर नहीं है। (Resected)

दिव्यांग विद्यार्थियों एवं सामान्य विद्यार्थियों के सांवेगिक समायोजन सम्बन्धी समस्याओं में कोई अन्तर नहीं है। (Resected)

दिव्यांग विद्यार्थियों एवं सामान्य विद्यार्थियों के समाजिक समायोजन सम्बन्धी समस्याओं में कोई अन्तर नहीं है। (Resected)

दिव्यांग विद्यार्थियों एवं सामान्य विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन सम्बन्धी समस्याओं में कोई अन्तर नहीं है। (Resected)

निष्कर्ष– शोध अध्ययन के परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालय में अध्यनरत दिव्यांग और सामान्य विद्यार्थियों के समायोजन में अन्तर है। सामान्य बच्चों की आत्म–अवधारणा शारीरिक रूप से अक्षम बच्चों (दिव्यांग) की तुलना में अधिक होती है। शारीरिक रूप से अक्षम बच्चें, सामान्य बच्चों की तुलना में अधिक अंतर्मुखी होते हैं। शारीरिक रूप से अक्षम छात्र हीनभावना और बीमारी से पीड़ित होते हैं। सामान्य लड़कें, सामान्य लड़कियों की तुलना में शैक्षिक और बौद्धिक रूप से बेहतर होते हैं।

सुझाव– सामान्य और शारीरिक रूप से अक्षम छात्रों की आवश्यकताओं के सन्दर्भ में घर और स्कूल के माहौल को बेहतर बनाने का प्रयास किया जाना चाहिए। स्कूल में विभिन्न प्रकार की गतिविधियों का आयोजन किया जाना चाहिए, तॉकि सभी छात्र गतिविधियों में भाग ले सकें। विद्यालयों में मार्गदर्शन एवं परामर्श प्रकोष्ठ का आयोजन किया जाए, तॉकि उचित मार्गदर्शन और परामर्श प्रदान किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Gupta Lilesh (2002): "A study of Future Awareness Vocational Interest and School Students", Ph. D. Education, Kota Open University.
2. Students in Lakhimpur Distt. of Assam. International Journal of Development Research Vol. 5 PP. 5594-5599. Sept. (2015).
3. Fuller, M. Healey, M. Bradley, A. and Tim H. 2004. Barriers to learning: a systematic study of the experience of disabled students in one university, Studies in Higher Education, 29 (3): 303- 318.
4. Gates, M.E.(1964). A Comparative Study of Some Problems of Social and Emotional Adjustment of Crippled and Non-Crippled Boys and Girls. Journal of Genetic Psychology, 58, 219-244.
5. Mohan (2004): "A Comparative Study of Adjustment and Personality Traits of Rural and Urban